ओ३म्

राष्ट्रीय आर्यनिर्मात्री सभा

तिथि–10 फरवरी 2021
सृष्टि संवत्- १, ९६, ०८, ५३, १२१
युगाब्द-५१२१, अंक-१३५, वर्ष-१३
माघ विक्रमी २०७७ (फरवरी 2021)

मुख्य संपादक : हनुमत्प्रसाद 'अथर्ववेदाचार्य'
कार्यकारी संपादक : आचार्य सतीश
सम्पर्क सूत्र: 9350945482
Web: www.aryanirmatrisabha.com
E-mail : krinvantovishwaryam@gmail.com

ऋषि दयानन्द

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

(राष्ट्रीय आर्यनिर्मात्री सभा का मासिक विचार पत्र)

मा नो महान्तमुत मा नो अर्भकं मा न उक्षन्तमुत मा न उक्षितम्। मा नो वधीः पितरं मोत मातरं मा नः प्रियास्तन्वो रुद्र रीरिषः ॥ –ऋ० १। ८। ६। २

व्याख्यान–हे (रुद्र) दुष्टविनाशकेश्वर! आप हम पर कृपा करो। (मा नो महान्तम्) हमारे ज्ञानवृद्ध और वयोवृद्ध पिता इनको आप नष्ट मत करो। तथा (मा नो अर्भकम्) छोटे बालक, और (उक्षन्तम्) वीर्यसेचनसमर्थ जवान, तथा जो [(उक्षितम्)] गर्भ में वीर्य का सेचन किया है, उसको मत विनष्ट करो। तथा [(पितरं मोत मातरम्०)] हमारे पिता, माता और प्रिय तनुओं (शरीरों) का (मा रीरिषः) हिंसन मत करो ।।

सम्पादकीय

हिमालय और आपदा ...

हम सभी इस तथ्य से भली-भांति परीचित हैं कि हिमालय पर्वत उत्तर दिशा से पूर्व तक फैला हुआ हमारे देश का प्राकृतिक प्रहरी सदा से रहा है और भविष्य में भी रहेगा। इसी हिमालय पर्वत की देन हमारे कृषि प्रधान देश को विभिन्न स्वनामधन्य नदियों के रूप प्राप्त है, गंगा इसकी प्रमुख नदी है, इसी गंगा नदी को सहयोग देकर पर्वतीय क्षेत्र में ही अपने नाम को समेटे हुए 'अलखनन्दा' बह रह है और इसी अलखनन्दा नदी में जिन नदियों-उपनदियों का जल मिलता है ऐसी अनेक नदियाँ हिमालय से निर्बाध निःसृत होती रहती हैं। इन्हीं नदी तटों पर हमारे पूर्वजों ने करोड़ों वर्षों तक प्रकृति के साथ सामञ्जस्यपूर्वक परमाणु से परमेश्वरपर्यन्त पदार्थों को जाना, साक्षात्कार किया और प्राणिमात्र को सुख पहुँचाते हुए मानव के इहलोक से परलोक तक के प्रवास की विधि व्यवस्थाओं की स्थापना ही नहीं की अपितु व्यवस्थाओं के हानि लाभों से भी मनुष्य मात्र को सुपरिचित कराया। वर्तमान में भी अनेक शुद्ध-सात्विक जीवन जीने वाले पर्यावरणविदों, प्रकृति प्रेमियों ने वर्तमान की विकासवादी व्यवस्थाओं के प्रति सरकारों को एवं विकासवादियों को अनेकों वर्षों पूर्व वर्तमान के विकास मॉडल से सावधान करने के अनेक विध उपाय किए, किन्तु न तो सरकारों ने सुना और न ही विकासवाद के पैरोकारों ने। मुझे भली-भांति स्मरण है कि जब टिहरी जैसे विशाल बाँध के विरुद्ध माननीय पर्यावरणविद् श्री सुन्दरलाल बहुगुणा जी के नेतृत्व में मैं अपने पूज्य पिताजी के साथ जाता था, वहाँ पर्यावरणीय तथ्यों एवं तर्कों के आधार पर जब वे किसी सरकारी अधिकारी, मन्त्रियों, राज्यपालों तक को धैर्यपूर्वक पूरी दृढ़ता से समझाते थे, तब उन महाशयों के पास हाँ कहने एवं हाँ में सिर हिलाने के सिवा दूसरा कोई प्रतिवाद नहीं होता था, श्री बहुगुणा जी ने 74 दिन उपवास किया, तत्कालीन उत्तर प्रदेश के राज्यपाल श्रीमान मोतीलाल वोरा केन्द्र सरकार के दूत बनकर टिहरी गये, श्री बहुगुणा जी को गंगापुत्र की उपाधि दी एवं उनके द्वारा उपस्थापित मुद्दों का समाधान करने का आश्वासन दिया। वहाँ श्री बहुगुणा जी ने उपवास स्थगित किया और यहाँ सरकार अपने 'राजहठ' के साथ पुनः ऐसे ही आगे बढ़ गयी जैसे वर्तमान की सरकार कृषि कानूनों को लेकर हठपूर्वक बढ़ रही है। पिछले निकटवर्ती वर्षों में ऐसे ही हिमालय के भीतरी संवेदनशील क्षेत्रों में बन रहे अनेक बाँधो का विरोध करते हुए प्रो. गुरुदास अग्रवाल उपाख्य स्वामी सानन्द का वर्तमान की केन्द्र सरकार ने बलिदान ही ले लिया, किन्तु उन योजनाओं को प्रकृति के अनुकूल बनाने की दिशा में कुछ न किया।

हिमालयवासी होने के एवं श्री बहुगुणा जी

शेष अगले पृष्ठ पर ....

पिछले पृष्ठ का शेष .... जैसे पर्यावरण प्रेमियों का सान्निध्य मिलने के फलस्वरूप हिमालय की संवेदनशील संरचना को समझने का कुछ-कुछ अवसर जब हमें मिला या मिलता है तब यह सहजता से समझ में आता है कि 'जितना-जितना मानवीय कृत्रिम यान्त्रिकी का हस्तक्षेप हिमालय पर्वत के साथ होगा, उतना-उतना देशवासियों को कष्ट भोगना ही पड़ेगा।' इससे संसार की कोई भी शक्ति कभी भी रोक न सकेगी, न ही रोक पाई है।

हम सभी यह भी भली-भांति जानते हैं कि हमारा यह भारत देश एक सम्पूर्ण नैसर्गिक व्यवस्थाओं से भरा पूरा देश है, जिसका अध्ययन-चिन्तन एक भारतीय दृष्टिकोण से होना चाहिए था, जो नहीं हुआ, अभी भी नहीं हो रहा है। अंधाधुन्ध बाँधों का निर्माण 'रूस मॉडल के आधार पर हमारे देश में स्वतन्त्रता के उपरान्त ही प्रारम्भ हो गया था, तो अब पूंजीवादी शोषणमूलक अमेरिकी बाजारवाद के हम अन्धे समर्थक बनाए जा रहे हैं, किन्तु भारत के भारतीय दृष्टि का क्या हो? यह न तो नेहरू जी के समाजवाद ने हमें समझने दी और न ही वर्त्तमान के पूंजीवाद भक्त शासक लोग समझने देना चाहते हैं। यह सभी मृगतृष्णा में भटक रहे हैं और जनता को भी भटकाना चाहते हैं। किन्तु ऐसा विकास का कोई मन्त्र एवं तन्त्र अनुसंधान नहीं करना चाहते जो प्रकृति परायण रीति-नीति पर आधारित हो, जिससे हिमालय भी बचे और बिजली भी मिले। वर्त्तमान में जिस हिमालयवर्त्ती आपदा ने हमें सावधान किया है, कम जन तथा सम्पत्ति हानि से दिन होने एवं वह भी रविवार होने के फलस्वरूप जिस महती हानि से सहस्राधिक लोग बच पाये हैं, उससे सरकारों को सीख लेनी ही चाहिए! हिमालय के भीतरी संवेदनशीन क्षेत्रों में यान्त्रिकी के अन्धे विकासवादी कार्यों को रोककर वैकल्पिक मॉडल की खोज होनी चाहिए। जिससे मानवीय सुरक्षा भी हो, राष्ट्र की सीमा का प्राकृतिक प्रहरी, शान्ति की खोज के लिए सुप्रसिद्ध हिमालय हिम-आलय ही बना रहे।।

-आचार्य हनुमत् प्रसाद, अध्यक्ष, आर्य महासंघ।

एक घड़ी तो भज ही लिया कर

एक घड़ी तो भज ही लिया कर, ओम् नाम को प्यारे।
एक अकेला नाम जो काटे, दुनिया के दुःख सारे॥
ईश्वर का आदेश वेद में, ओम् नाम का सुमिरन कर।
मिट जायेंगें जनम जनम के, भव-सागर के सारे डर।
हैं अज्ञानी ओम् न जप कर, फिरते मारे मारे ॥
एक घड़ी तो भज ही लिया कर, ओम् नाम को प्यारे।
एक अकेला नाम जो काटे, दुनिया के दुःख सारे॥

ओम् नाम निज नाम प्रभु का, और नाम गुण कर्म स्वभाव।
बैठ अकेले घड़ी दो घड़ी, भर ले मन में पूरण भाव ॥
उनका भी है वही सहारा, जो दुनिया से हारे।
एक घड़ी तो भज ही लिया कर, ओम् नाम को प्यारे।
एक अकेला नाम जो काटे, दुनिया के दुःख सारे॥

मिट न सका अज्ञान आज तक, जिसने तुझे रुलाया है।
अंध विश्वासों के कारण ही, रोया और रुलाया है ॥
एक झलक से ओम नाम की, हट जाएँ बादल कारे।
एक घड़ी तो भज ही लिया कर, ओम् नाम को प्यारे।
एक अकेला नाम जो काटे, दुनिया के दुःख सारे॥

तेरे मन की उलझन बिलकुल, बिना प्रभु नहीं सुलझेगी।
भटकेगा यदि इधर-उधर, ये उलझी और भी उलझेगी।
दुखों को आनन्द में बदले, अनुभव सबसे न्यारे।
एक घड़ी तो भज ही लिया कर ओम् नाम को प्यारे।
एक अकेला नाम जो काटे दुनिया के दुख सारे॥

- आर्य आनन्द स्वरूप, मुजफ्फरनगर

29 जनवरी - 27 फरवरी-2021 माघ ऋतु- शिशिर

सोमवार	मंगलवार	बुधवार	गुरुवार	शुक्रवार	शनिवार	रविवार
				आश्लेषा कृष्ण प्रतिपदा 29 जनवरी	मघा कृष्ण द्वितीया 30 जनवरी	पू० फाल्गुनी कृष्ण तृतीया 31 जनवरी
उ० फाल्गुनी कृष्ण चतुर्थी 1 फरवरी	हस्त कृष्ण पंचमी 2 फरवरी	चित्रा कृष्ण षष्ठी 3 फरवरी	स्वाति कृष्ण सप्तमी 4 फरवरी	विशाखा कृष्ण अष्टमी 5 फरवरी	अनुराधा कृष्ण नवमी/दशमी 6 फरवरी	ज्येष्ठा एकादशी 7 फरवरी
मूल कृष्ण द्वादशी 8 फरवरी	पूर्वाषाढ़ा कृष्ण त्रयोदशी 9 फरवरी	उत्तराषाढ़ा कृष्ण चतुर्दशी 10 फरवरी	श्रवण कृष्ण अमावस्या 11 फरवरी	धनिष्ठा शुक्ल प्रतिपदा 12 फरवरी	शतभिषा शुक्ल द्वितीया 13 फरवरी	पूर्वाभाद्रपदा शुक्ल तृतीया 14 फरवरी
उत्तराभाद्रपदा शुक्ल चतुर्थी 15 फरवरी	रेवती शुक्ल पंचमी 16 फरवरी	अश्विनी शुक्ल षष्ठी 17 फरवरी	भरणी शुक्ल षष्ठी 18 फरवरी	कृत्तिका शुक्ल सप्तमी 19 फरवरी	रोहिणी शुक्ल अष्टमी 20 फरवरी	रोहिणी शुक्ल नवमी 21 फरवरी
मृगशिरा शुक्ल दशमी 22 फरवरी	आर्द्रा शुक्ल एकादशी 23 फरवरी	पुनर्वसु शुक्ल द्वादशी 24 फरवरी	पुष्य शुक्ल त्रयोदशी 25 फरवरी	आश्लेषा शुक्ल चतुर्दशी 26 फरवरी	मघा शुक्ल पूर्णिमा 27 फरवरी	

28 फरवरी - 28 मार्च-2021 फाल्गुन ऋतु- वसन्त

सोमवार	मंगलवार	बुधवार	गुरुवार	शुक्रवार	शनिवार	रविवार
 फाल्गुन कृष्ण दशमी ऋषि दयानन्द जन्म दिवस 8 मार्च						पू० फाल्गुनी कृष्ण प्रतिपदा 28 फरवरी
उ० फाल्गुनी/हस्त कृष्ण द्वितीया/तृतीया 1 मार्च	चित्रा कृष्ण चतुर्थी 2 मार्च	स्वाति कृष्ण पंचमी 3 मार्च	विशाखा कृष्ण षष्ठी 4 मार्च	अनुराधा कृष्ण सप्तमी 5 मार्च	ज्येष्ठा कृष्ण अष्ठमी 6 मार्च	मूल कृष्ण नवमी 7 मार्च
पूर्वाषाढ़ा कृष्ण दशमी 8 मार्च	उत्तराषाढ़ा कृष्ण एकादशी 9 मार्च	श्रवण कृष्ण द्वादशी 10 मार्च	धनिष्ठा कृष्ण त्रयोदशी 11 मार्च	शतभिषा कृष्ण चतुर्दशी 12 मार्च	पूर्वाभाद्रपदा कृष्ण अमावस्या 13 मार्च	उत्तराभाद्रपदा शुक्ल प्रतिपदा 14 मार्च
रेवती द्वितीया 15 मार्च	अश्विनी शुक्ल तृतीया 16 मार्च	अश्विनी शुक्ल चतुर्थी 17 मार्च	भरणी शुक्ल पंचमी 18 मार्च	कृत्तिका शुक्ल षष्ठी 19 मार्च	रोहिणी शुक्ल सप्तमी 20 मार्च	मृगशिरा शुक्ल सप्तमी 21 मार्च
आर्द्रा शुक्ल अष्टमी 22 मार्च	पुनर्वसु शुक्ल नवमी 23 मार्च	पुष्य शुक्ल दशमी 24 मार्च	आश्लेषा शुक्ल एकादशी 25 मार्च	मघा शुक्ल द्वादशी/त्रयोदशी 26 मार्च	पू० फाल्गुनी शुक्ल चतुर्दशी 27 मार्च	उ० फाल्गुनी शुक्ल पूर्णिमा 28 मार्च

वर्ण व्यवस्थाः डॉ. अम्बेडकर बनाम वैदिक मत-८

-सोनू आर्य, हरसौला

संक्षेप में महाभारत युद्ध वेदों की अप्रवृति के कारण हुआ। प्रपञ्ची ब्राह्मणों ने स्व-स्वार्थों की रक्षा हेतु आर्ष ग्रन्थों में छेड़छाड़ तथा अनेक अनार्ष ग्रन्थों की रचना की। इन विकृत भाष्यों के आधार पर अयोग्य पश्चिमी विद्वानों ने धर्म परिवर्तन की मानसिकता से संस्कृत ग्रन्थों के अंग्रेजी भाष्य किये। डॉ. आम्बेडकर अपनी पुस्तकों में यह भी स्वीकारते हैं कि उन्होंने वैदिक व्यवस्थाओं का ज्ञान संस्कृत ग्रन्थों के अंग्रेजी भाष्यों को पढ़कर ही प्राप्त किया है। आश्चर्य की बात है कि डॉ. आम्बेडकर ने आक्षेपों को स्वीकारते हुए भी वैदिक साहित्य मुख्यतः मनुस्मृति का प्रबल विरोध किया। शायद यथार्थ के कड़वे अनुभवों ने सत्य को जानते हुए भी उन्हें न मानने को विवश किया था।

जाति की उत्पत्तिः- विशुद्ध वैदिक वर्ण व्यवस्था महाभारत काल के बाद विकृत हो जन्माधारित बन गई। उच्चवर्गीय अयोग्य व्यक्ति भी जन्म से ही उच्च तथा योग्य व्यक्ति जन्म से ही निम्न वर्ग समझा जाने लगा।

महाभारत और मनुस्मृति में कुछ पाठभेद के साथ पाये जाने वाले श्लोकों से ज्ञात होता है कि निम्न जातियां पहले क्षत्रिय थी किन्तु अपने निर्धारित कर्तव्यों का त्याग कर देने के कारण और फिर ब्राह्मणों द्वारा बताये प्रायश्चितों को न करने के कारण धीरे-धीरे ये क्षत्रिय शूद्र कहलाये- पौण्ड्रक, औड्र, द्रविड़, कम्बोज, यवन, शक, पारद, पहव, चीन, किरात, दरद, खाशा। 10/43-44 महाभारत अनु. 35/17-18 में इनके अतिरिक्त मेकल, लाट, कान्वशिरा, शौण्डिक, दार्व, चौर, शबर, बर्बर जातियों का भी उल्लेख है। बाद तक भी वर्णपरिर्वतन के उदाहरण मिलते हैं। जॉन विल्सन एवं एच.एल. रोज के अनुसार राजपूताना, सिंध और गुजरात के पोखरना या प्रष्करण ब्राह्मण और उत्तर प्रदेश में उन्नाव जिले के आमताड़ा के पाठक और महावर राजपूत वर्ण परिवर्तन से निम्न जाति से उच्च जाति के बने। (हिन्दी विश्वकोष भाग-4) ऐसा ही मत डॉ. आम्बेडकर ने अपनी पुस्तक शूद्र कौन में प्रकट किया है कि प्रारम्भ में शूद्र राजा भी हुए हैं किन्तु निर्धारित कर्म त्याग तथा ब्राह्मणों द्वारा बताए प्रायश्चित् न करने से ब्राह्मण द्वारा उनका उपनयन बन्द कर दिया गया। इससे उनका पतन हुआ व उनकी गणना शूद्र वर्ण में होने लगी।

किन्तु यह विकृत व्यवस्था भी वर्णाधारित न रह सकी अपितु इन विकृत वर्णों से अनेक वर्ग कर्मानुसार जाति में परिणत होते गए। जैसे-लौहार, कुम्हार, सुनार, चमार, अहीर, ग्वाले, भंगी, डोम (सफाई का काम वाले) केवट, मछियोर, कोरी और काछी अर्थात् तरकारी लाने व बेचने वाले, कहार कन्धा ढोने वाले, बढ़ई, तेली आदि।

इसके अतिरिक्त सर हरवर्ट रिजली के अनुसार जाति का प्रारम्भ इस प्रकार होता है कि कुछ कुटुम्ब जो अपने में सामाजिक श्रेष्ठता का कोई चिन्ह देखते हैं स्वजाति के अन्य मनुष्यों को स्वकन्या नहीं देते परन्तु उनकी कन्या ले लेते हैं। पर्याप्त संख्या होने पर अपने द्वारा बन्द कर लेते हैं, अपने ही लोगों मे विवाह करते हैं। जिस जाति के वे थे अपने को उसकी उच्च शाखा समझने लगते हैं। पूर्व जाति से अपना मूल सम्बन्ध छिपाने को कोई नाम रख लेते हैं और अलग जाति का दावा करते हैं।

स्थानभेद से भी अनेक छोटी-छोटी जातियाँ बनी हैं। जैसे ब्राह्मणों में कश्मीरी, गुजराती, सारस्वत (अर्थात् सरस्वती के पास रहने वाले) कान्यकुब्ज (कन्नौज के पास रहने वाले)।

जब कुछ लोग अन्यत्र जाकर बसते हैं तो जाति के मूल लोग यह समझने लगते हैं कि जो बाहर गए हैं उनका सम्बन्ध अन्य हीन लोगों से होता होगा। वे निषिद्ध भोजन करने लग गए हैं और जब ये असल जाति में अपनी कन्या देना चाहते हैं तो कुछ धन भी देना पड़ता है। इसके बचने हेतु परदेश में रहने वाले लोग आपस में ही विवाह करने लगते हैं।

जाति की उत्पति :- महर्षि मनु ने अपनी व्यवस्था में चार वर्णों का उल्लेख किया है। जाति अथवा गोत्रों का वर्णन नहीं किया क्योंकि उस समय जन्मतः कोई जाति नहीं थी और उसका कोई महत्व भी नहीं था। मनु जन्म आधारित व्यवस्था को अनुचित मानते थे। उन्होंने भोजनार्थ कुल गोत्र का कथन करने वाले को वमन करके खाने वाला जैसे निंदित विशेषण से संबोधित किया है। (3/119) जन्म आधारित वर्ण व्यवस्था मानने से मनु स्मृति की रचना ही व्यर्थ हो जाती है। मनु ने कर्मों का जो निर्धारण किया है वह सिद्ध करता है कि वे कर्म आधारित वर्ण व्यवस्था को मानते थे। इस प्रकार यह व्यवस्था ऋग्वेद से लेकर महाभारत काल तक चलती रही।

जाति का निर्माण व उपविभाजन केवल हिन्दुओं में ही नहीं अपितु मुस्लिमों व ईसाइयों में भी है।

जाति विभाजन का वर्णन शूद्र कौन पेज 115-117 पर डॉ आम्बेडर कुछ मुकद्दमों का हवाला देकर करते हैं ''न्यायालयों द्वारा अपनाए गए कई मानदण्डों में से एक यह भी था कि अब्राह्मण जातियाँ स्वयं को क्षत्रिय या वैश्य सिद्ध न कर सकें तो शूद्र हैं। इसके परिणामस्वरूप एक ही जाति एक राज में शूद्र रह गई अन्य में क्षत्रिय बन गई। न्यायालयों ने उस समय ऐसे बहुत निर्णय दिये। निर्णयों के कारण मराठा, यादव, कायस्थ आदि जातियाँ कहीं क्षत्रिय मानी गई कहीं शूद्र। अतः विभिन्न आधारों पर जातियों की उत्पत्ति, विभाजन व उपविभाजन होता रहा, जो वर्तमान में भी जारी है। कुछ जातियाँ अमानवीय, पशुवत् जीवन को विवश हुईं, कारण चहे कुछ भी रहे हों। इनका वर्णन डॉ. आम्बेडकर अपनी पुस्तक **हिन्दुत्व का दर्शन** में इस प्रकार करते हैं:-

क्रमश ....

संध्या काल

माघ-मास, शिशिर-ऋतु, कलि-5121, वि. 2077
(29 जनवरी 2021 से 27 फरवरी 2021)
प्रातः कालः 6 बजकर 15 मिनट से (6.15 A.M.)
सांय कालः 6 बजकर 00 मिनट से (6.00 P.M.)

फाल्गुन-मास, वसन्त-ऋतु, कलि-5121, वि. 2077
(28 फरवरी 2021 से 28 मार्च 2021)
प्रातः कालः 6 बजकर 00 मिनट से (6.00 A.M.)
सांय कालः 6 बजकर 15 मिनट से (6.15 P.M.)

सहज सरल सांख्य-९

- आचार्य सतीश, दिल्ली

आत्मा का वास्तविक चेतन स्वरूप सर्वथा अपरिवर्तित रहता है। अविवेक के कारण प्रकृति के सम्पर्क से अपने को अचेतन व प्रकृति को चेतन रूप में अनुभव करने लगता है। प्रकृति का एक उपयोग उसके अपवर्ग के लिए है जब देहेन्द्रियादि के सहयोग में वह समाधि लाभ के लिए प्रयत्नशील होता है। प्रकृति का दूसरा प्रयोजन भोग के लिए है अत: आत्मा के भोग और अपवर्ग के लिए प्रकृति है।

जब सर्ग रचना का मुख्य प्रयोजन अपवर्ग है तो सृष्टि के अनन्तर समस्त आत्माओं का अपवर्ग क्यों नहीं होता?

जन्म-मरण, व्याधि व विविध क्लेशों से तप्त होकर जिस आत्मा में वैराग्य की भावना उदित होती है वही-वही अध्यात्म मार्ग पर अग्रसर होता है, फिर समाधि लाभ द्वारा मोक्ष को प्राप्त कर पाता है। केवल सर्ग रचना से मोक्ष प्राप्ति की सभावना नहीं है।

एक ही बार की सर्ग रचना से सबको वैराग्य प्राप्त क्यों नहीं हो जाता?

आत्मा लम्बे काल से सांसारिक वासनाओं में लिप्त चला आ रहा है जो अत्यन्त बलवती व वैराग्य में बाधक हैं, अत: आत्मसम्बन्धी कथा-वार्ता के श्रवणमात्र से वैराग्य की सिद्धि नहीं होती, उसके लिए निरन्तर अभ्यास और भावनाओं की पवित्रता के लिए सतत् प्रयत्न करना पड़ता है।

साथ ही आत्माओं का भरण-पोषण उनका भोग और अपवर्ग है जो प्रकृति द्वारा किया जाना है। अब चूंकि आत्माएं अनन्त हैं तो उनके भरण पोषण का काल भी अनन्त होगा। इस प्रकार सृष्टि प्रवाह को सीमित नहीं किया जा सकता, वह अनादि और अनन्त होना चाहिए।

लेकिन प्रकृति का अधिष्ठाता व प्रेरयता तो ईश्वर है, फिर आत्मा के भोग-अपवर्ग की सिद्धि ईश्वर की प्रेरणा से ही क्यों नहीं हो जाती?

चेतन में अचेतन और अचेतन में चेतन की प्रतीति का होना अध्यास या अविवेक है। यदि प्रकृति को कल्पना मान लिया जाए तो यह अध्यास हो ही नहीं। लेकिन आत्मा का अविवेक तो प्रत्यक्ष सिद्ध है, अत: प्रकृति की वास्तविक सत्ता को स्वीकार करना अनिवार्य है। अब यह भी निश्चित है कि प्रकृति का कार्य में परिणत होने का अन्य कोई प्रयोजन है ही नहीं सिवाय पुरुष के भोगापवर्ग के सम्पन्न करने के। अत: प्रकृति की वस्तुसत्ता और प्रयोजन दोनों स्पष्ट हैं।

तो फिर प्रकृति प्रत्येक को भोग अथवा अपवर्ग प्रस्तुत क्यों नहीं कराती?

चेतन की जैसी स्थिति है तथा जैसा उसका उद्देश्य है उसके अनुसार प्रकृति किसी के लिए भोग और किसी के लिए अपवर्ग के साधन प्रस्तुत करती है, ऐसी व्यवस्था या नियम है। जैसे नेत्र सम्पन्न स्वयं मार्ग के कांटों से बच जाता है उसी प्रकार ज्ञानी जो संसार से स्वयं बचा है उसके लिए भोग प्रस्तुत करना निष्प्रयोजन है।

प्रकृति का सर्गरूप में होना परमात्मा की प्रेरणा के बिना सम्भव नहीं। तब आत्मा के भोग-अपवर्ग की सिद्धि साक्षात् ईश्वर से ही क्यों न मान ली जाए, प्रकृति व्यर्थ है?

साक्षात् भोगापवर्ग की सिद्धि उसी से होती है जो जगत्रूप में विद्यमान है। ईश्वर अथवा प्रेरणा स्वयं परिणत होकर जगत्रूप नहीं होते। स्थूल-सूक्ष्म देह तथा इन्द्रियादि के द्वारा अपवर्ग प्राप्ति के प्रयत्न किये जाते हैं जो प्रकृति के परिणाम हैं, इनके अभाव में केवल आत्मा द्वारा मोक्ष के लिए प्रयत्न किया जाना सम्भव नहीं। जैसे लोक में अग्नि से जलने पर कहते हैं कि लोहे से जल गया, लकड़ी से जल गया। इसी प्रकार आत्मा के अपवर्ग प्राप्त करने में प्रकृति एक विशिष्ट साधन है।

जब जगत् रचना का एकमात्र प्रयोजन आत्मा के भोगापवर्ग है, फिर जगत् रचना में ईश्वर की आवश्यकता क्यों मानी जाए?

प्रकृति अचेतन तथा परिणामी है, परमात्मा चेतन तथा अपरिणामी है। अचेतन बिना प्रेरक के परिणत नहीं होता, प्रेरक अपरिणामी होने से जगत्रूप में परिणत नहीं होता। अत: सृष्टि रचना में दोनों का होना आवश्यक है। अत: सर्गरचना में प्रकृति के साथ ईश्वर की नितान्त आवश्यकता है। लेकिन वह उपादान न होकर केवल निमित्त अथवा अधिष्ठाता है। दूसरे दृष्टिकोण से सृष्टि में राग तथा विराग दोनों का होना आवश्यक है। इन दोनों के योग को ही सृष्टि कहते हैं।

आइए अब देखते हैं कि सृष्टिक्रम क्या है?

महत् आदि क्रम से पांच भूतों की उत्पत्ति होती है। वे हैं- आकाश, वायु, अग्नि, जल व पृथ्वी। इनकी उत्पत्ति अपने लिए नहीं है क्योंकि ये अनित्य हैं। अत: समस्त सृष्टि आत्मा के लिए होती है। महत् आदि का आरम्भ प्रारम्भ के लिए है।

लेकिन यहाँ प्रश्न उठता है कि सर्ग की रचना में सूत्रकार ने दिशा और काल का उल्लेख नहीं किया है, लेकिन लोक व्यवहार में इनका अस्तित्व प्रतीत होता है। ऐसा क्यों?

आकाश में ही दिशा का अस्तित्व है, दिशा का आकाश के अतिरिक्त कोई स्वतन्त्र अस्तित्व नहीं है। वस्तु की गति को काल का प्रतीक मान लिया गया है, इसी तरह गति के समान लम्बाई या दूरी आदि को काल का प्रतीक माना गया है। इन सब को अपने अस्तित्व का अवकाश केवल आकाश के आधार पर उपलब्ध है। अत: दिशा या काल के नाम पर आकाश से काम लिया गया है।

महत् अर्थात् बुद्धि क्या है?

जो निश्चय कराने वाली है वह बुद्धि है अर्थात् निश्चिय वृत्तिक बुद्धि है। और धर्मादि अर्थात् धर्म, वैराग्य व ज्ञान भी बुद्धि के कार्य हैं। लेकिन ये सात्विक बुद्धि से होते हैं।

तो जब बुद्धि रजस् व तमस् से प्रभावित होती है तो क्या होता है?

तब उसमें अधर्म, अज्ञान, अवैराग्य व अनैश्वर्य का उदय हो जाता है।

क्रमश ....

आओ यज्ञ करें!

अमावस्या	11 फरवरी	दिन-गुरुवार	मास-माघ	ऋतु-शिशिर	नक्षत्र-श्रवण
पूर्णिमा	27 फरवरी	दिन-शनिवार	मास-माघ	ऋतु-शिशिर	नक्षत्र-मघा
अमावस्या	13 मार्च	दिन-शनिवार	मास-फाल्गुन	ऋतु-वसन्त	नक्षत्र-पूर्वाभाद्रपदा
पूर्णिमा	28 मार्च	दिन-रविवार	मास-फाल्गुन	ऋतु-वसन्त	नक्षत्र-उ.फाल्गुनी

गृहस्थ सम्बन्ध : भाग-१९

- आचार्य संजीव आर्य, मु०नगर

वस्तुतः श्रद्धा वह आवश्यक साधन है जो हमे आर्य और पुनः देवता बनाने का सामर्थ्य रखता है सुख का मूल धर्म है और सत्य ही को लोक में धर्म कहा जाता है- **न हि सत्यात् परोधर्म,** भग्वद्गीता की श्रद्धा की महिमा को कुछ ऐसे कहती है-

श्रद्धाविरहितं यज्ञं तामसं परिचक्षते॥
सत्वानुरुपा सर्वस्य श्रद्धा भवति भारत।
श्रद्धामयोऽयं पुरुषो यो यच्छ्रद्धः स एव सः॥
अश्रद्धयाहुतं दत्तं तपस्तप्तं कृतं च यत् ।
असदि उच्यतेपार्थ न च तत्प्रेत्य नो इह॥
श्रद्धावाननसूयश्च श्रृणुयादपि यो परः।
सोऽपि मुक्तः शुभाँल्लोकान्प्राप्नुयात् पुण्य कर्मणः॥
श्रद्धावान् लभते ज्ञानं तत्परः संयतेन्द्रियः॥
ज्ञानं लब्ध्वा परां शान्तिमचिरेणाधिगच्छति॥

श्रद्धा (सत्य को धारण करने की इच्छा) के बिना यदि यज्ञ भी कोई करे वह भी तामस ही होगा। यह तथ्य है कि यह मनुष्य जीवन श्रद्धा आधारित ही है, सत्य अर्थात् धर्म के प्रति जिसका जैसा विचार है वह वैसा ही हो जाता है। सत्य का आग्रही, सत्य का विरोधी, सत्य का अन्वेशी, सत्य का स्थापित करने वाला, सत्य के जानने का दिखावा करने वाला, सत्य के पालन का ढोंग करने वाला, अंशिक सत्य से ही सन्तुष्ट आदि-आदि। बिना असूया के जो सत्य को धारण करने की इच्छा से सुन मात्र भी लेता है वह भी दुःखों से छूटकर पुण्य कर्मों के द्वारा पुण्य लोकों को प्राप्त होता है। जो संयम नियम में रहते हुवे मोक्ष के साधन करने में तत्पर रहता है व श्रद्धावान ज्ञान को प्राप्त करता है और ज्ञान प्राप्त कर के परम शान्ति अर्थात् मोक्ष को प्राप्त करता है। इस श्रद्धा की महिमा वेदों में भी **श्रद्धया अग्निं समिध्यते श्रद्धया हूयते हवि।** व **श्रद्धया सत्यमाप्यते। आदि मन्त्रों में भूरिशः** वर्णित है। इसलिए प्रत्येक मनुष्य को चाहिए कि वह श्रद्धालु बने, संसार में बड़े-बड़े चमत्कार सत्य के खोज कर्त्ताओं, सत्य के ग्राहियों ने किये है। इस एक सत्य के ग्रहण में ही पूर्णतः धर्म का ग्रहण हो जाता है। इसी सत्य के ग्रहण की इच्छा से पूर्णतः युक्त होना ही चाहिए।

दीक्षया गुप्ताः- दीक्षा उन नियमों और अनुबन्धों का नाम है जिन्हें एक आचार्य अथवा पिता संस्कार के समय शिष्य वा यजमान को देता है। वस्तुतः वे वेद के आदेश ही हैं। जैसे नदी अपने तटबन्धों से सुरक्षित रहती है वैसे ही ये नियम उपदेश हमें सुरक्षित रखते हैं। जो सुरक्षित हैं वे ही गुप्त हैं, गुप्ता हैं। लोक में वैश्य वर्ग गुप्त या गुप्ता अपने नाम के साथ लिखता है समाज में क्षत्रिय आदि वैश्य को गुप्त अर्थात् रक्षित करते हैं यदि वह क्षत्रियों का अतिक्रमण करे तो गुप्त नहीं रहता है। वैसे ही जो ईश्वरीय आदेशों एवं ऋषि-मुनियों के निर्देशों के मर्यादारूपी तटबन्धों के भीतर रहते हैं वे रक्षित रहते हैं। मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम इसका सबसे बड़ा उदाहरण हैं। गृहस्थों को विशेषतः मर्यादाओं का पालन अवश्य करना चाहिए जिससे सम्बन्ध सुरक्षित रहें।

यज्ञे प्रतिष्ठिताः- यज्ञ विद्वानों का सत्कार है, शिल्प विद्या है, शुभ गुणों का दान है व संगतिकरण है। विद्वानों के सत्कार से क्या तात्पर्य है? कोई विद्वान आपने अपने घर बुलाया अथवा आप उसके पास गये प्रसन्नमुख होकर उसका स्वागत किया, अल्पाहार जलादि प्रस्तुत कर उपदेश सुना, भोजन कराया, दक्षिणा दी विदा कर दिया। सामान्यतः इसी को सत्कार माना जाता है, यह सत्कार है भी किन्तु पर्याप्त नहीं है। विद्वान के सत्कार में सर्वाधिक महत्वपूर्ण है जिस ब्रह्मविद्या को जानकर वह विद्वान बना है, जिसको वह उपदेश करता है, उस विद्या का अनुकरण श्रद्धापूर्वक करना। जिससे उसके विद्या पढ़ने एवं उपदेश करने का उद्देश्य पूरा हो सके। शुभ गुणों का दानादान ही संसार को आर्ष बना सकता है। इसीलिए यह भी यज्ञ है। जो भी दान किया जाये उसमें यह अवश्य ही ध्यान रखना चाहिए कि उसकी परिणति शुभगुणों के रूप में हो रही है अथवा नहीं। आपने यदि किसी को अन्न दिया, धन दिया वा समय दिया तो यह अवश्य देखना चाहिए कि यह शुभ गुणों के उत्पादन वा धारण में लगा है? क्योंकि इसके अनन्तर दान किया गया हो तो वह यज्ञ की श्रेणी में नहीं होने से व्यर्थ अथवा हानिकारक भी हो सकता है। विभिन्न प्रकार की शिल्पविद्या भी उपकारक होने से यज्ञ ही है। इनकी वृद्धि करना भी अत्यन्त आवश्यक कार्य गृहस्थों का है। संगतिकरण प्रमुख रूप से यज्ञ है- संगतिकरण सम् गति करण है इसमें गति है। गति जीवन का लक्षण है, जहाँ गति है वहाँ जीवन है गति समाप्त तो जीवन समाप्त। गति उत्तम तो जीवन उत्तम, गति जहाँ प्रवाह शीलता का नाम है वहीं गति अवस्था का भी नाम है। जैसे दुर्गति, सुगति, सद्गति आदि इन सब गतियों/अवस्थाओं आदि पर भारी है संगति। यह ठीक-ठीक गति है, ठीक-ठीक अवस्था है, यही गति सर्वोत्तम है, इस ही गति में सबको साथ लेकर चला जा सकता है। यह सबको जोड़कर संगठन करने की अवस्था है अतः संगठन एक यज्ञ है इस यज्ञ का प्रथम आयोजन आर्य परिवार का संगठन है, द्वितीय संयोजन समाज रूपी संगठन, तृतीय आर्य राष्ट्र और चतुर्थ **कृण्वन्तो विश्वमार्यम्** अर्थात् आर्य विश्व करना है। समझने और कहने मात्र की यह बात नहीं अपितु यह वह मर्यादा है जिसका आचरण आर्यवर शिरोमणि महाराज श्रीराम आदि पूर्वजों ने किया। हम इसमें क्या कर सकते है? प्रथमतः अपने परिवार का आर्यकरण व द्वितीय समाज रूपी संगठन में स्वयं के योग्य कार्य तलाश कर उसमें लग पड़ना ही हमारी भूमिका होगी, जो भी आर्य संगठन रूपी यज्ञ के संवारेने, सजाने एवं सम्पादन मे लगा है और उसकी दृष्टि में **कृण्वन्तो विश्वमार्यम्** है तो वह अश्वमेध यज्ञ कर रहा है। जो अश्वमेध कर रहा है उसे अश्वमेध का फल भी अवश्य ही मिलेगा। इसी से प्रत्येक आर्य की प्रतिष्ठा होगी इससे ऊँची कोई प्रतिष्ठा नहीं हो सकती है बिना अश्वमेध को दृष्टि में रखे यदि विद्वानों का सत्कार, शिल्पविद्या और शुभगुणों का दान किया भी तो वह ठीक-ठीक फल का देने वाला नहीं हो सकता। अतः प्रत्येक आर्य चाहे वह कहीं भी क्यों न हो उसकी आँखों में अश्वमेध का स्वप्न एवं उससे प्राप्त होने वाली प्रतिष्ठा होनी चाहिए क्योंकि ईश्वर की आज्ञा जीवन भर यज्ञ करने स्वयं उसमें प्रतिष्ठित होने की व उससे प्रतिष्ठा प्राप्त करने की है। **लोको निधनम्** इस संसार में जब तक निधन न हो जावे, तब तक अर्थात् आजीवन ईश्वर की आज्ञायें पालनीय ही हैं। यह अद्भुत् है ऋषिगण एक ओर तो हमें मर्यादाओं में बांधते हैं वहीं दूसरी ओर हमारी सीमाओं को विश्व के शासक बनने तक खोल देते हैं। सनातन धर्म का यह सन्तुलन दर्शनीय एवं अनुकरणीय है।

क्रमश ....

गौकरुणानिधिः - गौ आदि पशुओं की रक्षा के लिये ऋषि का संदेश

ऋषि दयानन्द ने वेद के सिद्धान्तों को जनसामान्य तक पहुँचाने के लिए अन्य कार्यों के साथ-साथ एक पूर्णकालिक लेखक के रूप में भी अनेकों ग्रन्थों की रचना की है। उन्होंने विशुद्ध व्याकरण के ग्रन्थों से लेकर वेदभाष्य तक व सत्यार्थ प्रकाश जैसे कालजयी ग्रन्थ से लेकर गायादि पशुओं की रक्षा व उपयोगिता के लिए गौकरुणानिधि जैसी सामान्य जन के लिए भी अत्यन्त उपयोगी पुस्तकों की रचना की है। ऋषि ने इस पुस्तक में गायादि पशुओं के पूरे अर्थशास्त्र को, उनकी उपयोगिता को दर्शाया है तथा समीक्षा भाग में मांसाहार व मद्यपान आदि की निस्सारता व हानियों को दर्शाया है। वहीं दूसरी ओर नियमादि देकर कृषि तथा पशुओं की उन्नति का मार्ग प्रदर्शित किया है।

यहाँ प्रस्तुत है गौकरुणानिधि पुस्तक, आईये इसका स्वाध्याय करते हैं। ध्यान से पढ़ें तथा विचार करें कि यदि हम ऋषि के बताए अनुसार गायादि पशुओं की रक्षा करते हैं, उनका उपयोग लेते हैं तो न केवल पूरे राष्ट्र को अपितु एक एक व्यक्ति व एक एक परिवार स्मृद्धि को प्राप्त हो सकता है। यही मार्ग हमारी आर्थिक उन्नति का मूल है तथा इसको अपनाकर हम पाप से भी बच सकते हैं।

गतांक से आगे ...

१४.-जब वर्ष के पहले किसी प्रतिष्ठित सभासद् और अधिकारी का स्थान रिक्त हो, तब अन्तरङ्गसभा आप ही उसके स्थान पर किसी और योग्य पुरुष को नियत कर सकती है।

१५-अन्तरङ्गसभा कार्य के प्रबन्ध-निमित्त उचित व्यवस्था बना सकती है। परन्तु वह नियमों और उपनियमों से विरुद्ध न हो।

१६-अन्तरङ्गसभा किसी विशेष कार्य के करने और सोचने के लिए अपने ही सभासदों और विशेष गुण रखनेवाले सभासदों को मिलाकर उपसभा नियुक्त कर सकती है।

१७-अन्तरङ्गसभा का कोई सभासद् मन्त्री को एक सप्ताह पहिले विज्ञापन दे सकता है कि कोई विषय सभा में निवेदन किया जावे। और वह विषय प्रधान की आज्ञानुसार निवेदन किया जावे। परन्तु जिस विषय के निवेदन करने में अन्तरङ्गसभा के पाँच सभासद् सम्मति दें, वह निवेदन अवश्य करना ही पड़ेगा।

१८-दो सप्ताह के पीछे अन्तरङ्गसभा अवश्य हुआ करे, और मन्त्री और प्रधान की आज्ञा से वा जब अन्तरङ्गसभा के पाँच सभासद् मन्त्री को पत्र लिखें, तो भी हो सकती है।

१९-अधिकारी छह प्रकार के होगें-१. प्रधान, २. उपप्रधान, ३. मन्त्री, ४. उपमन्त्री, ५. कोषाध्यक्ष, ६. पुस्तकाध्यक्ष।

मन्त्री, कोषाध्यक्ष, पुस्तकाध्यक्ष इनके अधिकारों पर आवश्यकता होने पर एक से अधिक पुरुष भी नियत हो सकते हैं। और जब किसी अधिकार पर एक से अधिक पुरुष नियत हों, तो अन्तरङ्गसभा उन्हें कार्य बाँट देवे।

२०-**प्रधान**-प्रधान के निम्नलिखित अधिकार और काम होवें-

१-प्रधान अन्तरङ्गसभा आदि सब सभाओं का सभापति समझा जावे।

२-सदा सभा के सब कार्यों के यथावत् प्रबन्ध और सर्वथा उन्नति और रक्षा में तत्पर रहे। सभा के प्रत्येक कार्य को देखे कि वे नियमानुसार किये जाते हैं वा नहीं। और स्वयं नियमानुसार चले।

३-यदि कोई विषय कठिन और आवश्यक प्रतीत हो, तो उसका यथोचित प्रबन्ध तत्काल करे। और उसकी हानि में वही उत्तर देवे।

४-प्रधान अपने प्रधानत्व के कारण सब उपसभाओं का, जिन्हें अन्तरङ्गसभा संस्थापित करे, सभासद् हो सकता है।

२१-**उपप्रधान**- इस के ये कार्य कर्त्तव्य हैं-

प्रधान के अनुपस्थित होने पर उसका प्रतिनिधि होवे। यदि दो वा अधिक उपप्रधाान हों, तो सभा की सम्मति के अनुसार उनमें से कोई एक प्रतिनिधि किया जावे। परन्तु सभा के सब कार्यों में प्रधान को सहायता देनी उनका मुख्य कार्य है।

२२-**मन्त्री**-मन्त्री के निम्नलिखित अधिकार और कार्य हैं-

१-अन्तरङ्गसभा की आज्ञानुसार सभा की ओर से सबके साथ पत्र-व्यवहार रखना ।

२-सभाओं का वृत्तान्त लिखना, और दूसरी सभा होने से पहले ही पूर्व वृत्तान्त-पुस्तक में लिखना वा लिखवाना।

३-मासिक अन्तरङ्गसभाओं में उन गोरक्षकों या गोरक्षक-सभासदों के नाम सुनाना, जो कि पिछली मासिक सभा के पीछे सभा में प्रविष्ट वा उससे पृथक् हुये हों।

४-सामान्य प्रकार से भृत्यों के कार्य पर दृष्टि रखना। और सभा के नियम, उपनियम और व्यवस्थाओं के पालन पर ध्यान रखना।

५-इस बात का भी ध्यान रखना कि प्रत्येक 'गोरक्षक सभासद्' किसी न किसी समुदाय में हों। और इसका भी कि प्रत्येक समुदाय ने अपनी ओर से अन्तरङ्गसभा में प्रतिनिधि किया होवे।

६-पहले विज्ञापन दिये पर मान्यपुरुषों को सत्कारपूर्वक बिठाना।

७-प्रत्येक सभा में नियत काल पर आना और बराबर ठहरना।

२३-**कोषाध्यक्ष**-कोषाध्यक्ष के नीचे लिखे अधिकार और कार्य हैं-

१- सभा के सब आय धन का लेना, उसकी रसीद देना, और उसको यथोचित रखना।

२-किसी को अन्तरङ्गसभा की आज्ञा के विना रुपया न देना। किन्तु मन्त्री और प्रधाान को भी उस प्रमाण से देवे, जितना अन्तरङ्गसभा ने उनके लिए नियत किया हो, अधिक न देना। और उस धन के उचित व्यय के लिए वही अधिकारी, जिसके द्वारा वह व्यय हुआ हो, उत्तरदाता होवे।

३-सब धन के व्यय का रीतिपूर्वक बहीखाता रखना। और प्रतिमास अन्तरङ्गसभा में हिसाब को बहीखाते समेत परताल और स्वीकार के लिए निवेदन करना।

२४-**पुस्काध्यक्ष**-पुस्तकाध्यक्ष के अधिकार और कार्य ये होवें-

जो पुस्तकालय में सभा की स्थिर और विक्रय की पुस्तक हों, उन सबकी रक्षा करे। और पुस्तकालय-सम्बन्धी हिसाब भी रखे, और पुस्तकों के लेने-देने का कार्य भी करे।

क्रमश ....

द्विदिवसीय आर्य/आर्या प्रशिक्षण के बाद सत्रार्थियों के अनुभव

जीवन की यात्रा के संदर्भ छोटे-छोटे अनुभव व मार्गदर्शक व अन्य कई संस्थाओं से जुडे होने के कारण धार्मिक प्रवृतियों में रूचि रही। महर्षि दयानन्द के उपदेश 'वेदों की ओर लोटो' इसके मूल कारण का पता लगा। क्योंकि यहाँ सभी शंकाओं का प्रमाणिक समाधान है। साथ ही देश प्रेम की भावना के साथ इस मातृभूमि के लिए हमें क्या करना है? इस प्रश्न का उपदेशक द्वारा आर्यावर्त्त की परिभाषा और हमारे पतन के कारणों की जानकारी हुई। एक अध्यापक होने के नाते छात्रों को बचपन से ही इन सभी सत्यों से परिचित कराना तथा देश-प्रेम की भावना व धर्म की सही-सही जानकारी उन्हें आजीवन देना ही मेरा सहयोग रहेगा।

नाम : जगपाल आर्य, आयु : 37 वर्ष, योग्यता : स्नातकोत्तर, कार्य : शिक्षक , पता : चाली, फरीदाबाद, हरियाणा।

दोनों आचार्यगण की विद्वत्ता मूर्धन्य हैं, मुझ जैसे वैदिक धर्मावलम्बी एवं स्वाध्याय एवं लेखनशील मनुष्य के लिए गौरव और आश्चर्य-मिश्रित अनुभव रहा। मैं विभिन्न शिविरों में भिन्न-भिन्न स्थानों और संस्थानों में जाता रहता हूँ किन्तु यह अनुभव अनोखा और ओजपूर्ण रहा। दो दिनों के इस सत्र में इतने विषय लिये गये जो कई दफा सात से आठ दिनों के सत्रों में भी संभव नहीं होता।

ईश्वर साक्षात्कार धर्म की परिभाषाएं, राष्ट्र के प्रीत सवेदनाएं, देश और समाज में फैली विभिन्न विषमताओं को उजागर कर उनके स्थान पर वैदिक मत और तर्क, बुद्धि तर्क से सत्य को ग्रहण कर असत्य को त्यागने का आह्वान्, ये एकाग्रता से सभी शिविराथियों ने सुनकर भागीदारी की। शिविर में नव-युवक से लेकर वरिष्ठ नागरिक, सभी जागरुक बने रहे। आज सत्र के द्वितीय भाग में (अर्थात् भोजन के बाद) वरिष्ठ आचार्य महोदय ने हिन्द, हिन्दू, आर्य, आर्यावर्त्त और भारत, राष्ट्र अस्मिता की जो व्याख्या की मेरे लिए भी पूर्व परिचित विषय ने नवीन प्राप्त किया साधु-साधु।

लेखन कार्य, प्रवचन कार्य, शिक्षण-प्रशिक्षण पूर्ण गम्भीरता और वैचारिक क्षमता से। स्वयं लेखक भी हूँ। 70 वर्ष की आयु पर आज 45 वर्ष के नवयुवक की ईश कृपा से आज, अभी भी बुलाएं, दौड़ा चला आऊंगा।

नाम : सुधीर कुमार बंसल, आयु : 69 वर्ष, योग्यता : एम.बी.ए., कार्य : रिटायर्ड, पता : फरीदाबाद, हरियाणा।

सत्र में मुझे आर्य समाज के सिद्धान्त, उद्देश्य एवं कार्यप्रणाली बहुत अच्छी लगी। ईश्वर के बारे में पूर्ण ज्ञान हुआ एवं इनसे प्रेरित होकर मैंने उनके सिद्धान्तों पर चलने की अन्दर ही अन्दर कसम खाई व प्रण लिया कि मैं आर्य समाज के सिद्धान्तों व संस्कारों को पूरे-पूरे ग्रहण करके उन पर चलने का प्रयास करूगा व अन्य दोस्तों रिश्तेदारों व जानकारों को भी आर्य प्रशिक्षण में लाने का भरसक प्रयास करुंगा।

मैं आर्य निर्मात्री सभा के इस आर्य/आर्या निर्माण के महान कार्य में अपना सहयोग परिस्थिति व सामर्थ्य अनुसार तन-मन-धन से सहयोग करता रहूँगा।

नाम : प्रदीप कुमार, आयु : 41 वर्ष, योग्यता : एम.एस.सी., कार्य : सरकारी नौकरी, पता : मोदीपुरम, मेरठ, उ.प्र.।

सत्र का अनुभव अद्‌भुत रहा है। इन दो दिनों में ईश्वर को जाना, उसके संविधान को जाना है। समाज में चली आ रही कुरीति को जाना। ईश्वर की उपासना को सीखा। उपासना करने की विधि को जाना। अपने पूर्वजों के बारे में जाना कि आर्य कौन थे? राष्ट्र प्रेम के बारे में जाना। अपनी जिम्मेदारियों को जाना कि उन्हें कैसे पूरा करना है और इस देश को पुनः आर्यावर्त्त बनाना है।

नाम : सौरभ कुमार, आयु : 37 वर्ष, योग्यता : स्नातक, कार्य : नौकरी, पता : गंगानगर, मेरठ, उ.प्र.।

अभी तक वेद के सन्दर्भ में मति स्पष्ट नहीं थी। वेद का महत्व, उसका जीवन पर क्या प्रभाव हो सकता है। अभी तक मैं राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ को ही एक मात्र राष्ट्र-भक्त संगठन मानता था। आज मुझे अनुभव हुआ कि संघ से अधिक राष्ट्रभक्त एवं राष्ट्र का निर्माण करने में आर्य समाज का योगदान अधिक होगा। जाति व्यवस्था का विरोधी तो संघ भी है, परन्तु व्यवहारिक रूप में नहीं। अभी मैं आर्य समाज के बारे में अधिक नहीं जानता हूँ कि वास्तव में हमारी तथा कथित निम्न जातियों से कितने लोग इसमें कार्य कर रहे हैं। क्योंकि देखने में यह आता है कि अधिकतर संगठनों में पदाधिकारी उच्च जातियों के लोग होते है। जिससे हमारे निम्न जातियों के बन्धु कुंठित रहते हैं। मैं एक शिक्षक के नाते बहुत सारे ऐसे शिक्षकों को जानता हूँ जो कि अपनी पीड़ा हमें बताते हैं। मैं चाहता हूँ कि निम्न वर्ग के भारतीयों को आर्य बनाने का अधिक प्रयास किया जाए, मैं उसमें सहयोग भी कर सकता हूँ।

मैं अपना सहयोग करता रहूँगां समय-समय पर विद्यालय कार्य के उपरान्त जो समय मिलेगा उसमें अपना योगदान दूंगा। अपने क्षेत्र में प्रयास करके बहिनों एवं भाइयों को जोड़ने में पूर्ण प्रयास करूंगा।

नाम : अशोक कुमार चाहर, आयु : 46 वर्ष, योग्यता : एम.ए., बी.एड, कार्य : शिक्षक, पता : बघा, आगरा, उ.प्र.।

यह सत्र बहुत मानसिक शंकाओं को दूर करने वाला एवं कुछ गलत धारणाओं को तोड़ने वाला था। यह ही नहीं, किन्तु बहुत जिज्ञासाएँ जो समय के साथ, उम्र के साथ, आत्मा, सृष्टि एवं ईश्वर के विषय में थी, वह सब उत्तर पा चुकीं है। जिज्ञासा थी कि कैसे अपने जीवन के आत्मिक लक्ष्य जो कि ईश्वर प्राप्ति है, को प्राप्त किया जाये, उसका रास्ता स्पष्ट रूप से मिल गया। काफी धार्मिक गुरुओं से लक्ष्य के बारे में तो जाना, परन्तु कभी कोई स्पष्ट से उसका रास्ता बताता न दिखा। इस सत्र की मेरे लिए सबसे बड़ी महत्ता यह थी की मैंने उस मार्ग को जाना ।

नाम : आशीष, आयु : 24 वर्ष, योग्यता : स्नातक, कार्य : हैल्थ कॉच, पता : फरीदाबाद, हरियाणा।

ईश्वर एक है वह सर्वव्यापक, सर्वशक्तिमान, सर्वज्ञाता, अजन्मा, अनन्त, निराकार और वह दयालु है। मुझे यह पता चला कि वास्तव में धर्म होता क्या है? वेदों में लिखी आज्ञाओं का अपने जीवन में पालन करना ही धर्म है। वह धर्म सत्य सनातन वैदिक धर्म। हमे पता चला कि वास्तव में प्रेत का अर्थ क्या है। प्रेत शब्द संस्कृत का है जिसका अर्थ मृत शरीर। हमे पता चला कि हिन्दु का अर्थ काला, लुटेरा, चोर इसलिए हमे मुसलमान व अन्य लोग हिन्दू बुलाते हैं। भूत क्या है? अर्थात् भूत वह है जो पहले था पर अब नहीं है। इसके तीन कारण है 1. दिमागी बुखार, 2.मानसिक रोग, 3.आवेश में ताकत 90- 95 प्रतिशत तक बढ जाती है। आर्यों को शिक्षित करना श्रेष्ठ बनाना।

नाम : नितिन कुमार, आयु : 21 वर्ष, योग्यता : 11वीं, कार्य : विद्यार्थी, पता : खल्लपुर, बरेली, उ.प्र.।

26 जनवरी 2021 गणतन्त्र दिवस पर आर्यसमाज गंगाविहार के शिलान्यास की कुछ झलकियाँ

29 से 31 जनवरी 2021 तक आर्या गुरुकुल करनाल में सम्पन्न हुई प्रवक्ता प्रशिक्षण कक्षा की कुछ झलकियाँ

5 से 7 फरवरी 2021 तक आर्यसमाज शहर में सम्पन्न हुई आर्य पुरोहित प्रशिक्षण कक्षा की कुछ झलकियाँ

आर्य निर्माणशाला में विभिन्न स्थानों पर निर्मात्री सभा के आचार्यों द्वारा आर्य व आर्या निर्माण

स्वामी व प्रकाशक आचार्य हनुमत्प्रसाद द्वारा सांगोपांगवेद विद्यापीठ, आर्ष गुरुकुल, टटेसर-जौन्ती, दिल्ली-81 से प्रकाशित

कृण्वन्तो विश्वमार्यम् - समाचार पत्र मे छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक का पूर्णतया सहमत होना आवश्यक नहीं है। क्योंकि अनवधानतावश त्रुटि एवं मतभिन्न होना सम्भव है। सभी न्यायिक विवाद दिल्ली में निपटाये जाएंगे।